एजेंसी (वेब वार्ता न्यूज)

बच्चों को इन 5 तरीकों से सिखाएं पैसे बचाने की कला

कहते हैं बचपन में जो आदत डल जाए वह जीवनभर साथ रहती है। तो क्यों न बच्चे में छोटी उम्र से ही पैसों को बचाने का गुण भी डाला जाए। यह अगर वह अच्छे से सीख जाए तो यकीन मानिए बड़े होने पर उसे कम से कम मनी मैनेजमेंट को लेकर कोई दिक्कत नहीं जाएगी क्योंकि उसे बचत के साथ ही सही जगह खर्च करने के बीच का फर्क पता होगा। तो चलिए जानते हैं कि बच्चे में कैसे ये गुण डाले जा सकते हैं।

पिगी बैंक से करें शुरुआत

बच्चे को पिगी बैंक लाकर दें और उन्हें बताएं कि इसमें जो भी पैसे डलेंगे वह उनके ही होंगे। हर महीने उन्हें पॉकेट मनी दें और उसमें से कुछ अमाउंट पिगी बैंक में डलवाएं। धीरे-धीरे इसे भरता देख बच्चा न सिर्फ खुश होगा बल्कि खेल-खेल में ही बचत का गुण सीख जाएगा।

सेविंग इंट्रेस्ट

बैंक भी सेविंग पर इंट्रेस्ट देते हैं, ऐसे में अगर पिगी बैंक में सेव मनी पर आप अपनी ओर से छोटा सा भी इंट्रेस्ट दे दें तो बच्चे के लिए तो यह बहुत बड़ी बात हो जाएगी। यह उसे मनी सेव करने के लिए और भी ज्यादा प्रोत्साहित करेगा।

शॉपिंग के दौरान

शॉपिंग के लिए जब लिस्ट बनाते हैं तो उसके लिए एक बजट भी तय किया जाता है। ऐसा ही बजट बच्चे के लिए सेट करें। उन्हें बताएं कि वह कितने रुपये उस दिन खर्च कर सकते हैं। दरअसल, शॉपिंग पर जाने पर अक्सर बच्चे का मन मचल जाता है और वह कई चीजों को लेने की जिद करने लगता है। इस स्थिति में अगर उसे पता होगा कि उसके पास कितना अमाउंड है खर्च करने के लिए तो वह अपनी प्राथमिकता खुद तय करेगा, जो रोने-धोने के ड्रामे के साथ ही उन्हें नीड और वान्ट में फर्क करना भी सिखाएगा।

गोल सेट करें

बच्चे के सामने गोल सेट करें। उदाहरण के लिए, अगर बच्चे को कोई टॉय चाहिए तो उससे कहिए कि वह उसे पा सकता है लेकिन उसके लिए पैसे उसे खुद इकट्ठा करने होंगे। गोल सेट होने पर बच्चा मोटिवेट होगा कि वह अपने फेवरिट टॉय को पाने के लिए सेविंग करे। इस पर जब आपसे उसे इंट्रेस्ट मिलेगा तो वह डीमोटिवेट भी नहीं होगा।

खुद पर रखें काबू

यह न सोचें कि बचत के गुण बच्चे में यूं ही आ जाएंगे, क्योंकि वे अपने पैरेंट्स से ही सबसे ज्यादा सीखते हैं। ऐसे में अगर आप खुद जमकर पैसा खर्च करते हैं और बच्चे से उम्मीद करें कि वह मनी सेव करना सीखे तो यह सिर्फ ख्याली पुलाव बनकर रह जाएगा।

कार्गो को दुनियाभर में यात्रा करना देख शानदार : विक्रांत मैसी

विक्रांत मैसी और श्वेता त्रिपाठी द्वारा अभिनीत हिंदी साइंस-फिक्शन फिल्म कार्गो को पिछले साल मामी फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित किया गया था, और अब एसएक्सएसडब्ल्यू (साउथ बाई साउथवेस्ट) फिल्म फेस्टिवल 2020 में इसका अंतर्राष्ट्रीय प्रीमियर होगा।

विक्रांत ने कहा, कार्गो बहुत ही खास फिल्म है। पिछले साल हम इस फिल्म को लेकर संघर्ष कर रहे थे क्योंकि हमें नहीं पता था कि इसके साथ क्या करना है. यह फिल्म किस दिशा में जाएगी. लेकिन इस फिल्म को दुनियाभर के 15 से अधिक फेस्टिवल्स में चुना जाना हमारे लिए वास्तव में दिल खुश कर देने वाली खबर है। अपने देश और सिनेमा का प्रतिनिधित्व करने के लिए यह बहुत छोटी फिल्म है. यह बहुत अच्छी बात है। यह हमारे लिए एक गर्व का पल है, क्योंकि इसे हासिल करने वाली यह पहली भारतीय साइंस-फिक्शन फिल्म है।

मियामी साइंस-फिक्शन फेस्टिवल में भी इसे दिखाया जाएगा। वहीं टेनेसी में चित्तानूगा फिल्म महोत्सव, सिडनी साइफाई, पर्थ में रिविलेशंस, और लंदन साईफाई फिल्म फेस्टिवल में इसे प्रदर्शित किया जाएगा।

सिंथेटिक फैब्रिक से लेकर लेदर स्लीपर्स तक, ऐसे करें फुटवियर की सफाई

आप महंगी से महंगी ड्रेसेस या एक्सेसरीज क्यों न पहन लें लेकिन जब तक उससे मिलते-जुलते जूते या चप्पल पैरों में नहीं होते, तब तक हमारे लुक में वो बात नहीं आती जिसे सोचकर हमने तैयार होना शुरू किया था।

महिलाओं या पुरुषों का जूते-चप्पलों के लिए प्यार किसी से छिपा नहीं है। किसी पार्टी में खुद को स्टाइलिश लुक देने के लिए ड्रेसेस के साथ-साथ ट्रैंडी और कूल स्लीपर्स का होना भी बेहद जरूरी है। ऐसे में हम महंगे से महंगा जूता खरीदने से भी नहीं परहेज नहीं करते, लेकिन जनाब तब क्या जब आप एक पार्टी भर में इन्हें पहनने के बाद इन्हें साइड कर देते हैं। ऐसे में आपके जूते तो खराब होते ही हैं साथ ही साथ गंदगी के कारण इनकी चमक भी फीकी पड़ जाती है। ऐसे में सबसे ज्यादा ध्यान देने वाली बात अगर आप अपने जूते-चप्पल को अभी कुछ दिन पहनने का मन नहीं बना रहे तो उन्हें उनके हिसाब से साफ़ करके रखें। जिससे उनकी चमक भी सालों-साल बनी रहेगी साथ ही साथ वो खराब भी नहीं होंगे।

स्लीपर्स या जूतों को साफ़ करने से पहले हम इस बात को अच्छे से समझना होगा कि इन्हें कब और कितनी बार साफ़ करना है। स्लीपर्स या जूतों के फेब्रिक से लेकर उनकी क्वालिटी तक हमें इस बात की जांच करनी पड़ेगी कि क्या वे वॉशेबल है या नहीं। साथ ही साथ इस बात का भी ध्यान रखें अगर आप अपने स्लीपर्स को सॉक्स के साथ या सॉक्स के बिना पहनती हैं तो किस तरह से उनकी सफाई की जानी है। घर में पहनने वाले स्लीपर्स या जूतों को आप महीने ने एक-दो बार धो सकती है। लेकिन बाहर पहनने वाले स्लीपर्स या जूतों की क्वालिटी चेक किए बिना इन्हें धोने की गलती बिल्कुल न करें। इनके पीछे का लेबल सबसे पहले ध्यानपूर्वक पढ़ें बाद में ही उन्हें उनके अनुसार पानी में डालें।

इस बात से कोई अनजान नहीं है कि लेदर स्लीपर्स या जूते को सीधा पानी में नहीं डाला जाता। जी हां, ऐसा भूल कर भी न करें। इससे आपका जूता तो काम से जाएगा ही साथ ही साथ उसके पैसे भी वसूल नहीं होंगे। लेदर स्लीपर्स या जूते को साफ़ करने के लिए सबसे पहले आप उस पर लगी मिट्टी को किसी सूखे कपड़े से साफ़ कर लें। इसके बाद जिससे आपको जूते साफ़ करने हैं उसका घोल बनाए और इसमें कपड़ा भिगोकर, अच्छे से निचोड़कर लैदर स्लीपर्स को धीरे-धीरे साफ़ करें। थोड़ी देर के लिए इनको ऐसे ही छोड़ दें और लगभग 5 मिनट बाद सूखे कपड़े से पोंछकर साफ़ करें। लेदर को साफ़ और सॉफ्ट रखने के लिए किसी अच्छे कंडीशनर का इस्तेमाल करें और कुछ घंटो तक सुखाने के बाद ही इनको पहनें। आप चाहें तो पेट्रोल की मदद से भी इन्हें चमका सकते हैं।

सिंथेटिक और कॉटन फेब्रिक के स्लीपर्स-जुते की सफाई करना सबसे आसान है। इसके लिए आपको सबसे पहले स्लीपर्स पर लगी मिट्टी को किसी कपड़े से साफ लें। इसके बाद डिटर्जेंट में डालकर उन्हें थोड़ी देर के लिए भिगो दें। इससे आपके स्लीपर्स पर लगे जिद्दी धब्बे हट जाएंगे। इसके बाद 10 से 15 मिनट के बाद ब्रश की मदद से रगड़ें और उन्हें धोकर साफ़ करें। यही नहीं अगर आपके शूज का लेबल पूरी तरह वॉशेबल हैं तो आधे घंटे तक इनको डिटर्जेंट में भिगोकर रखें और बाद में ब्रश की मदद से उन्हें धोकर साफ़ करें। लेकिन एक बात का ध्यान हमेशा रखें अगर आप अपने स्लीपर्स या जूतों को मशीन में धो रही हैं तो इन्हें गलती से भी ड्रायर में न सुखाएं।

रबड़ वाले जूते या स्लीपर्स साफ़ करने के लिए आपको किसी भी तरह की कोई जद्दोजहद करने की कोई जरूरत नहीं है। इनको आप सीधा पानी में डाल सकती हैं और ब्रश की मदद से उन्हें रगड़कर साफ करें। रबड़ वाले स्लीपर्स या जूते को हम और आप ज्यादातर बरसात के मौसम में पहनना प्रेफर करते हैं। ऐसे में उनका गीला होना भी लाजमी है इसलिए अपने पैरों को किसी भी संक्रमण से बचाने के लिए इनको हर रोज धो दें।

मटैलिक स्लीपर्स या शूज की सफाई करते समय इस बात का ख्याल हमेशा रखें कि आप इन्हें गलती से भी पानी में न भिगोएं, वरना इनकी चमक पूरी तरह से खराब हो जाएगी। इनको साफ़ करने के लिए केवल और केवल आप गीले कपड़े का ही इस्तेमाल करें। सबसे पहले आप गीला कपड़ा लें उसमें थोड़ा सा कंडीशनर मिला लें। इसके बाद कपड़े को ऊपर से रब करते हुए जूतों को ऊपरी सतह से साफ़ कर लें। यही नहीं जूतों की चमक को बरक़रार रखने के लिए आप इस पर वाइट विनेगर का भी इस्तेमाल कर सकती हैं।

अगर जूते के भीतरी हिस्से यानि सोल की सफाई करनी है तो सबसे पहले आप इसे अपने जूते से बाहर निकल लें। अगर जूते का सोल आपके जूते से चिपका हुआ है तो फिर दो कप गर्म पानी में एक चम्मच डिटर्जेंट वॉश मिलाएं। एक मुलायम सूती कपड़ा लें और इसमें भिगोकर जूते के अंदर वाले भाग को साफ़ करें।बार-बार कपड़े को धोकर तब तक साफ़ करें जब तक जूते के अंदर जमी गंदगी पूरी तरह से साफ़ न हो जाए। फिर इसे सूखने के लिए थोड़ी देर धूप में रख दें।

होटल मैनेजमेंट में भी हैं अवसर

आजकल होटल मैनेजमेंट के क्षेत्र में भी युवाओं का रुझान बढ़ता जा रहा है। जिस प्रकार होटल कारोबार, रिसार्ट व टूर ऑपरेटर का क्षेत्र विकसित होता जा रहा है, होटल मैनेजमेंट कोर्स करने वाले युवाओं की मांग बढ़ती जा रही है। आजकल इस क्षेत्र में मांग इतनी ज्यादा है कि कई बड़े पांच सितारा होटलों ने अपना होटल मैनेजमेंट कोर्स शुरू कर दिया है।

इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (आईएचएम), दिल्ली

आईएचएम की स्थापना 1962 में हुई थी। इसमें दाखिला एनसीएचएमसीटी जेईई के आधार पर होता है। यहां हॉस्पिटैलिटी की फील्ड में डिप्लोमा, अंडरग्रैजुएट और पोस्ट ग्रैजुएट कोर्स कराए जाते हैं। सभी कोर्सों के लिए योग्यता की शर्तें अलग-अलग हैं जिनको संस्थान की वेबसाइट पर देखा जा सकता है।

इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, मुंबई

आईएचएम, मुंबई की स्थापना 1954 में ऑल इंडिया विमिंस सेंट्रल फूड काउंसिल ने स्वर्गीय श्रीमती लीलावती मुंशी के नेतृत्व में की गई थी। शुरू में इसका नाम इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नॉलजी ऐंड ऐप्लाइड न्यूट्रिशन, मुंबई था।

वेलकमग्रुप ग्रैजुएट स्कूल ऑफ होटल ऐडमिनिस्ट्रेशन (डब्ल्यूजीएसएचए)

इस संस्थान की 1986 में मणिपाल में स्थापना हुई थी। इसका सात विदेशी यूनिवर्सिटियों से समझौता ज्ञापन है। इसके अलावा इसे इंटरनैशनल होटल असोसिएशन (आईएचए), पैरिस से भी मान्यता मिली हुई है। इसमें दाखिला 12वीं में हासिल मार्क्स के आधार पर होता है।

इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (आईएचएम), चेन्नै

यहां भी एनसीएचएमसीटी जेईई के आधार पर दाखिला होता है। 1963 में भारत सरकार और तमिलनाडु की राज्य सरकार ने संयुक्त रूप से इसकी स्थापना की थी।

इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नॉलजी ऐंड ऐप्लाइड न्यूट्रिशन, हैदराबाद

1972 में इसकी स्थापना फूड क्राफ्ट संस्थान के तौर पर हुई थी। 1984 में इसे इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट के तौर पर अपग्रेड किया गया और 1986 में नैशनल काउंसिल फॉर होटल मैनेजमेंट, कैटरिंग टेक्नॉलजी, नई दिल्ली से मान्यता मिली। यहां भी दाखिला एनसीएचएमसीटी जेईई के आधार पर होता है।

डिपार्टमेंट ऑफ होटल मैनेजमेंट, क्राइस्ट यूनिवर्सिटी

बेंगलुरु स्थित इस संस्थान की स्थापना 1991 में की गई थी। यहां ऐडमिशन क्राइस्ट यूनिवर्सिटी एंट्रेंस एग्जाम के माध्यम से होता है।

आर्मी इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट ऐंड कैटरिंग टेक्नॉलजी

बेंगलुरु स्थित इस संस्थान की स्थापना 1996 में आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसायटी के तत्वाधान में हुई थी। यह बेंगलुरु यूनिवर्सिटी से मान्यता प्राप्त है। यहां दाखिला एआईएचएमसीटी डब्ल्यूएटी के आधार पर होता है।